© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 06 Issue: 06 | October-December 2015

डॉ. जगदीप शर्मा 'राही' के काव्य में राजनीतिक एवं आर्थिक मूल्य

कविता कुमारी, सहायक प्रोफेसरए के. एम. राजकीय महाविद्यालय,
नरवाना, जीन्द (हरियाणा)

शोध आलेख सार

जगदीप शर्मा 'राही' ने अपने काव्य में राजनीति का चित्रण किया है। उनके काव्य में राजनीति अनेक रूपों में दिखाई देती है। आज के युग में राजनीति सरलता और स्वच्छता के स्थान पर कुटिलता और कलुषता का प्रतीक बन गयी है। अपने छोटे–छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिए नेताजन बड़े–बड़े राजनीतिक षडयन्त्र रचते हैं। जिस कूटनीति का प्रयोग विदेशी आक्रान्ताओं के लिए किया जाना चाहिए, उसका प्रयोग अब राजनीतिक दल एक–दूसरे को नीचा दिखाने के लिए कर रहे हैं। राजनीति पूर्णतः कूटनीति में बदल गई है। नेताओं का मानना है कि कूटनीति राजनीति का प्रखर रूप होती है। राजनीति में चारित्रिक हनन आम बात हो गई है। डाकू, हत्यारे और अपराधवृति के लोगों का राजनीति में निर्बाध प्रवेश हो रहा है। शिष्ट और शालीन नागरिक चुनाव लड़ने से घबराते हैं। पैसे के बल से चुनाव प्रक्रिया उपहास बनकर रह गई हैं। नेताओं की कथनी और करनी में अन्तर आ गया है। वे जो कहते हैं करते नहीं हैं और जो करते हैं उसे कहते नहीं हैं। भारत कहने को ही लोकतांत्रिक देश है । जबकि जनता की यहॉ कोई सुनवाई नहीं होती। आज के राजनीतिक परिवेश में जनता के हित में काम उतना नहीं होता जितना कि उसका ढोल पीटा जाता है। कुर्सी पर बैठे हुए राजनेता विज्ञापन बाजी में अधिक विश्वास करते हैं। स्थिति यही है कि प्रत्येक नेता ने अपने आगे बाजा बजाने वाले चाटुकारों को ही आश्रय दिया है।

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

मुख्य–शब्द स्वतंत्रता की खुशी, भ्रष्टाचार, मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति, औद्योगीकरण।

स्वतंत्रता की खुशी

जगदीप शर्मा 'राही' ने अपनी कविता 'कल का आगमन' स्वतंत्रता से पूर्व की संध्या अर्थात् 14 अगस्त, 1947 की संध्या को समर्पित की है। कवि कहता है कि कल हम स्वतंत्र हो रहे हैं। ऐसा लग रहा है मानो छः सौ वर्षो का कष्ट आज ही चुभ रहा हो। खुशी के मारे सारे अंग फड़फड़ा रहे हैं। अब तो मन चाहता है कि ऐसे ही बैठकर कल का इंतजार करें। कल जब हम स्वतंत्र होगें तो कल की हवा कैसी होगी। कल का सूरज कैसा होगा। कल केवल हमारा अपना कल होगा क्योंकि हमारा देश स्वतंत्र हो जाएगा। स्वतंत्रता की यही खुशी कवि की निम्न पंक्तियों में प्रकट हुई है–

Note : For Complete paper/article please contact us info@jrps.in
Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper